मुहावरे त कहावते संग्रह

मणिहेलु

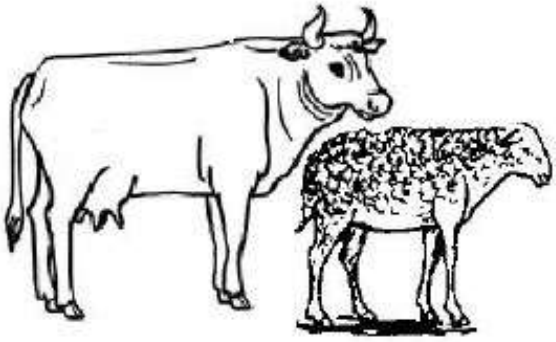

मणिहेलु

खास मुहावरे त कहावत

पंगवाड़ी अन्तर

2012 EDITION

₹ 10

मणिहेलु

By

Pangiteam

First edition: October 2012

Compiling team:-

Mr. Binaya, Parmas.

Mr. Shubham, Chowki

Editorial team:-

Mr. Mahatam, Karel.

Mr. Hari Ram, Killar.

Mrs. Babita kumari, Chowki

This book can be reproduced for the contribution and development of the Pangwali language. No portion of this book may be reproduced in any form for commercial use, without written permission of the Compilers.

For further suggestions, contributions and involvement in development of Pangwali language, please contact

Mahatam Mobile No. 9418431531

Hari Ram Mobile No. 9418429574

Devi Singh Mobile No. 9418411199

Dhanunjay Mobile No.: 9418411599,

Parmas village, Killar Post, Pangi, Chamba district. 176323.

Mail to: pangiteam@gmail.com

☞ Would you like to read this book in your computer? Or you want to share this book to your friends and relatives, who are out of valley?

For an electronic copy (pdf downloadable file) please mail to pangiteam@gmail.com

प्रस्तावना

मुहावरे त कहावत, बलि हर बोक अब्बुल लगती। जेस बोली अन्तर सुआ मुहावरे त कहावत भुन्ति, से बोली शुणु जे त बोक करुं जे तति खरि लगती। मुहावरे इये शुणुजे होरे त तसे मतलब होरा भुन्ता। बोक करिं त सबी पता भुन्ति पर मुहावरे सिर्फ तेस मेह्णु पता भुन्ते जेस अपु बोली सुसुर पता असि।

एचेल सुआ मेह्णु अपु बोली बिश्रीं लगो असे, खास कर मुहावरे। पांगी घाटी अन्तर होरे होरे मेह्णु ऐण लगो असे। त इ जरुरी भुण लगो असु की पंगवाड़ी अन्तर कुछ मुहावरे त कहावत किठि कइ के मेह्णु नजर अन्तर अण्हि असि।

उम्मिद असि कि इस किताब बलि असि सोबि मेह्णु, पंगवाड़ि भाषाई कुछ मुहावरे त संसारे मशहुर कहावते बारे पता लगता। अस उमेद कते कि, तुस सोब इस मणिहेलु किताबे मज्जा नेन्ते।

धन्यवाद

संपादक

Preface

Idioms and Sayings are the beauty of a language. A language tends to be more beautiful and sweet, when there are many idioms. Idioms are those ways of expressions which sounds something and what those meant are far from reality. Everybody can speak a language but only those who speak idioms and sayings who know their language well.

In these days, people are forgetting their language, particularly the idioms and sayings. There are new people coming every day to Pangi valley. Therefore, it is becoming necessary to collect idioms and sayings and bring them out for the public. Since, the old idioms are becoming obsolete and new idioms coming every year with the younger generations it would be nice to make record of them and preserve them.

We hope that through this book we would get to know some idioms and sayings of Pangwali language and other famous voice sayings. We wish, you would enjoy going through the idioms and sayings of this Manihelu book.

Thank you.

Editor

- जीं उधार भारो सु - नाप -तोल कर देना। -कोई चीज पूरी भर के देना
- हातउ टुठ घेंण - आदत हो जाना -टाईप करुं जे तें हातउ टुठ गोसे
- भोटे मखीर करुं - थोड़ा थोड़ा कर के सब खा जाना।

भोटे मखीर करुं

गीहे कुकिड़ दाल बराबर भुन्ति

- गीहे कुकिड़ दाल बराबर भुन्ति -घर के चिज चाहे जितनी भी अच्छी हो, फिर भी औरों के चीज अच्छा लगना।
- पिठ एण - किसी पर बोझ होना -अउं कि तें पिठ ओसा ना।
- लघां तूए पुजा गुए - भेजा कहाँ, पहुँचा कहाँ।

- घटी घेण - अभ्यस्त/ आदि होना।
- बथ न केंण - जलदी से चलना।
- अपु से अन्हारे बि केण - अपने लोगो को दुर से भी पहचानना।
- दाछि पकणेल, कागे मुहँ बाड़ - सही समय पर खराबी आना।

बथ न केंण

- गुदिर गा - मरना, नीचे मनभाव से बोलना
- ढुक न तोपती शाग, उंघ न तोपती बिछाण - जरुरत में कोई भी चीज चलती है।
- सुखान्ती नाओ - पसन्द ना करना। -शालु राणि तस सुखान्ती नाओ

ढुक न तोपती शाग, उंघ न तोपती बिछाण

जे भ्याग मारे कदि न हारे

- होरि चुल जिआणे जुल, अपु चुल सुने मुल - अपना घर अपना ही होता है।
- यक गिहे भांणे बजते रेहेन्ते - परिवार में झगड़ा होता रेहता है।
- जे भ्याग मारे कदि न हारे - जो सुबह उठता है, उसका कोई भी काम अधुरा नहीं रहता।

- टन भइ लेउड, खा कुतुरे जंघ - घर में कमाने वाले होते हुए भी दुसरों को काम करने के लिए बुलाना।
- पेटे भारि भुण - गर्भधारण करना। (में जुएलि पेटे भारि असि।)
- लिच जुं सिच देन्ति -छोटि मुंह बड़ि बात।

पेटे भारि भुण

- लुंगते जऊ कूण लगे - जवानी में बुढ़ापा आ जाना।-जवान होकर भी काम न करना
- गुले फिउड़ फोटाण - पेहले ही अपना हिस्सा ठीक करना। -मेईं तें गुले फिउड़ फोटाउ।
- साचे बुढ़ी जिआण - सभी की बारी आती है।

लुंगते जऊ कूण लगे

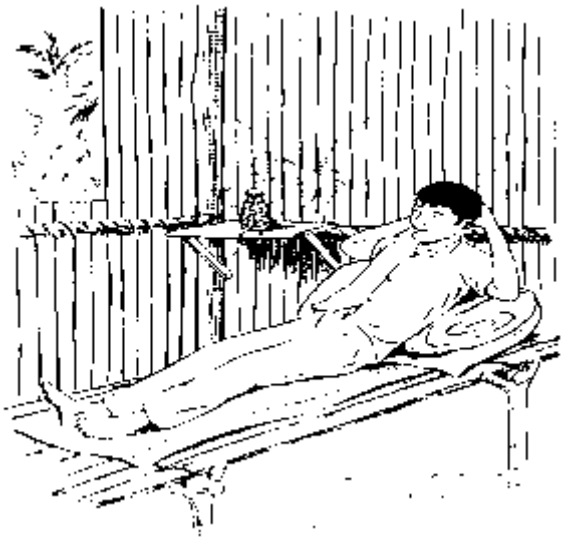

शीते बुढ़ी टान्क

- चुकिर तोड़ - सही ईलाज, समस्या का सही समाधान।
- ढिएड़ी केउ भूण - अनजान होना– मुंह बइ खान्तु त पुंछिड़ बइ ना कतु।
- शीते बुढ़ी टान्क - बार बार अराम करना।

- डा डा न शुखांणु - आपस में मिल के न रहना।
- न घाटि न बाधी - बेफिकर, बिना कोई चिन्ता में रेहना।
- गद्दी न छई त न मुंछे - कोई फायदा न होना।
- मुंह बाड़ देण - मजे को खराब करना।

- मगिरि हतोउ लई बिशुं - परेशानी में होना
- अपुं चुल हगि भर, बगानि चुल जियाणु जुल - पराया/ बेगानि चीज को सम्भाल के इस्तेमाल करना चहिए।
- चौड़ा भुंण - गुस्से में आना। - तु त तपल बड़ा चौड़ा भोई गा।

मगिरि हतोउ लई बिशुं

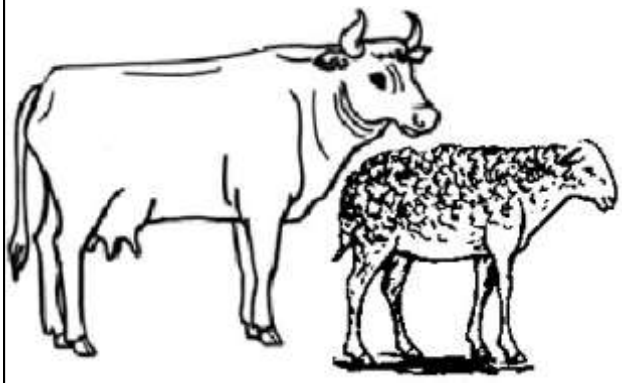

चुरीं चिरह्उ भूण

- किड़े खा रेजुड़ हेरि काश -रस्सी देख के डर लगना।
- ना गीहे ना घते – कहीं का भी ना रहना।
- बथ भिथ लगुं, फाट खड़ी घेण -रास्ता बन्द हो जाना/ रास्ता गुम हो जाना। में अगर फाट खड़ी गोउ।
- चुरीं चिरह्उ भूण - पिछे पिछे चलना/ जाना। किसीका गुलाम बनना
- तालु सुखाण छाण - चुप करना। -लालु तस तालु सुखाई छड़ा

किड़े खा रेजुड़ हेरि काश

- बटीइ घेण - डर के मारे चुपचाप बैठना।

- जेतु चादुर तती जंघ टडीं -जितना कमाई है, उतना ही खर्चा करना। -कोया, जेतु चादुर तती जंघ टडीं, ना त अस सोबी नगी भोई घेन्ते
- हतोउ आले लगुं -चिन्तित होना। फिक्र होना। -तें हतोउ आले किस लगो से?
- बक भोई घेण - थक जाना।

- ना देणी बुध त मन्गे किढ़ण बार - देना तो नहीं है, ऐसै ही बहाना बनना।
- यक कान त सोउ मारते मुग - एक तीर से सौ मृग मारना।
- यक लिगं कठे हन्ड़ि शाग बणतु, दुबारि तथा आग लगति -एक बार तो किसी को ठग सकते है, पर दुसरी बार पकड़ा जाते है।
- चोरे मन खादेड़ा - चोर की मन गोठली पर होता है

चोरे मन खादेड़ा

लमुएल राजे इये तेस खरि बोक षिचेलि, तेस अन्तर खरि जुएलि बारे ई सोब बताउ

- –खरि जुएलि केस मेति? तेसे मुल हीरे मोती कैयां बि सुआ असा।
- –तेसे धेणि मन अन्तर तेस जे सुआ भरोसा असा। होर तेस फायदे कमि न भून्ति।
- –से अपु उम्र भई बुराई न लान्ति भलु कति।
- –से अपु हतेउ बई धागे त ऊन्ने झिणे बणान्ति।

अपु हतेउ बई धागे त ऊन्ने झिणे बणान्ति

खरि जुएलि मुल हीरे मोती कैयां बि सुआ असा।

समान व्यापारी के जहाजी के समाने ईं दूरा मगांति।

- –से पथवारि खड़ि घेन्ति, त अपु गीहे बाड़ी रोटि खलान्ति। त अपु नौकरियाणी के धे बखरु-बखरु कम करं जे देन्ति।
- –से जिम घेई कई हेरति त तसे खरिदति। से अपु कमाई बोलि तठि बग बणान्ति।
- से मझीन कशि कई बिशति त अपु बौउढ़ बि मजबूत

खरि जुएलि, देंण् जे हतेऊ खोलति त गरीबी के सहायता करंण जे हथ बढ़ान्ति।

कति।

- से सम्हाई परख छति कि मैं धंधा फायदे बाड़ा असा। राति तेसे लैंप न हुशता।
- से देंण् जे हतेऊ खोलति त गरीबी के सहायता करंण जे हथ बढ़ान्ति।
- से अपु गीहे बाड़ी जे डंग हेर न डरति, किस कि तेसे गीहे सम्हाई मेहणु गरम झिणे लान्ते।
- से अपेप दुन्गुस, चेदुर त शरातोटि गरम धागे बई बणानति।
- जिखेईं तेसे धाणि टजोट अन्तर बिशता तेस देशे मोटे-मोटे मेहणु के बुछ बि तेसे सुआ ईज्जत भुन्ति।
- से ब्याथुड़, चादुर त मझीन बणाई कई व्यापारीधे बैचति।

जिखेईं तेसे धाणि टजोट अन्तर बिशता तेस देशे मोटे-मोटे मेहणु के बुछ बि तेसे सुआ ईज्जत भुन्ति।

एणे बाड़े टेम जे अत्मविश्वास जुओइ बिशति।

- से अक्ले बोक कति होर तेसे बोक अन्तर कृपा, शिक्षा ईं भून्ति।
- से अपु गीहे चाल चलण बड़े गौर जुओई हेरती। बगैर मेहनते अपु रोटि न खान्ति।

खरि जुएलि अपु गीहे चाल चलण बड़े गौर जुओई हेरती।

- तेसे गभुर तेसे खड़ि कई खरि ईज्जत कते।

तेसे धाणि बोता कि सम्हाई जिल्हाणु खरे-खरे कम किए पर तु तेन्हि सोबि कैयां बि बड़िया असि

- तेसे धाणि बि खड़ि कई तेसे तारीफ कता, त बोता कि सम्हाई जिल्हाणु खरे-खरे कम किए पर तु तेन्हि सोबि कैयां बि बड़िया असि।
- शोभेईं त झूठ असु। खरु हेरुं बि बैकार असु। पर जे जिल्हाणु परमेश्वर हेर डरति तेस जे सोब खरु बोते।

लिखित पंगवाड़ी भाषा : यक शुरुवात त तसे इतिहास

जुलाई 2006 अन्तर बिनय त धनुंजय भाषाविद्द *Linguist* पेहलि बार पांगी घाटि ए। अस तपल भाषाविद्द हिसाब जुए ओ थिए। हें लक्ष्य इ थिया कि अस पंगवाड़ी लिख कइ भाषा सुह्लियत करुं जे लोकल मेह्णु के मदद कते। मेह्णु जपल पुछ्तेथ कि अस कोउं भिन्थ त अस कि कम कते, त हें जवाब थिया कि अस भाषाविद्द भिन्थ त असी जे भाषा लुखो नेई तेस भाषा लिख कइ सुह्लियत करुं जे मदद कते। जपल असी बोलु कि अस 'रिसर्च' कते त सुआ मेह्णु इ समझे कि अस Ph.D करुं लगो असे। त से होरे मेह्णु जे बि ती बोलुं लगे। ती भोई कइ सुआ मेह्णु असी Ph.D बोलि पेह्च्छाण लग गे। जपल अस तुबारि – पंगवाड़ी मासिक पत्रिका छपाण लगे त सुआ मेह्णु एसे सुसुर मतलब ना समझ बटे। अस इ हरालुं चाह्तेथ कि पंगवाड़ी भाषा अन्तर बि किताब, पत्रिका त होरे छपाणे चिज बण सकती।

असी पंगेईं एई कइ छ: साल भोई गो असे। इस बुछ असी पंगवाड़ी भाषाएं वर्णविचार त व्याकरण पुठ, त पंगवाड़ी कथा पुठ शोध कई के लेख लिखो असे। किस कि से सोब अंग्रेजी अन्तर (*phonetics*) लिखो असे। तस आम मेह्णु न समझ सकते, त 2011 फुलियाठ बुछ, अस पंगवाड़ी वर्णमाला त व्याकरणे पुठ हिन्दी अन्तर किताब बणो असी। ए किताब सिर्फ चेक करुं जे त अगले साल सुसुर छपाण जे ब्योरा किओ असे। तुबारी, बोउए प्यार, मणिहेलु आदि ए सोब कम सिर्फ पंगवाड़ी भाषा सुह्लियत करुं जे असे ना कि Ph.D जे लगो असे। हां, इ जरुर असु कि अस अपु लेख जपल कोई विश्व विद्यालय पुठ दी कई दुई साल पढ़ते त तपल Ph.D डीग्री मी सकती। पर अभेईं तकर अस कोई विश्व विद्यालय पुठ Ph.D एड़मिशन निओरी नेई। पर असी भाषा-विज्ञान (Linguistics) पढ़ो असा त यक भाषा विकास त साक्षरता प्रोजेक्टे (Language development and literacy project) नाउं, NGO जुए मी कइ कम कते जे कि भाषा सुह्लियत अन्तर कम कते। अब जीं हें कम बढ़ुं लगो असु त अस बि तत टेम देण नेइ लगो। हें NGO बि असी होरे-होरे कम देन्ति। त अब इ जरुरी भुण लगो असु कि इठियाणि मेह्णु इ अपु भाषा सुह्लियत कइ सकते।

✍Binaya and Audrey, Dhanunjay and Rosy